

आशा भारद्वाज

2051

I

ASHA ARCHIVES

232

Nityārcana
Vidhi.



श्रीस्वष्टुदवतायेनमः॥ अथ स्नानविधिर्लिख्यते॥ नासिय॥ त्रैलोक्यं
आत्मतत्त्वाय स्वाहा॥ त्रैलोक्यं विद्यातत्त्वाय स्वाहा॥ त्रैलोक्यं भिवतत्त्वा
य स्वाहा॥ ॥ वक्त्रं गच्छिजान॥ भतं वक्त्रं सहस्रानि भिवविष्णुभक्त
निव॥ सूर्यनामसहस्रानि भिववंधं कनाम्यहं॥ नासिय॥ न्यास
याय॥ त्रैलोक्यं गुणवतः॥ त्रैलोक्यं गलभाय नमः॥ त्रैलोक्यं स्वामी
स्वष्टुदवतायेनमः॥ सादाय॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं यद्वत्॥ दि

स्वंधन॥रुट्१०॥ऊअङ्गसतिय॥यँ॥निखंतिय॥नँ॥ऊअवाय
क॥वं॥त्रैङ्गङ्कःत्रस्त्रायरुट्॥त्रैङ्गङ्कौत्रंगुषात्यांनमः॥त्रैङ्गङ्कौत
र्जनीत्यांस्वाहा॥त्रैङ्गङ्कूमध्यमात्यांवषट्॥त्रैङ्गङ्कैर्त्रनामिकाः
त्यांहूँ॥त्रैङ्गङ्कौकनिष्ठात्यांवोषट्॥त्रैङ्गङ्कःत्रस्त्रायरुट्॥त्रैङ्गङ्कौ
हृदयायनमः॥त्रैङ्गङ्कौमिनस्स्वाहा॥त्रैङ्गङ्कौमिखायेवषट्॥

त्रैङ्गङ्कैकववायहूँ॥त्रैङ्गङ्कौनवववायवोषट्॥त्रैङ्गङ्कःत्रस्त्रायरु
ट्॥ऊससाधन॥त्रिकाजवाय॥ताकप्य॥गंगवज्जमनवेवग
दावनिस्नस्रति॥नर्मदसिंधूकावत्रिजसस्मिन्संनिधिंवृत्॥
सादाय॥त्रैङ्गङ्कःत्रस्त्रायरुट्॥रुट्॥संकल्प॥त्रद्यास्मत्सकसपा
पक्षयकामनयापथाभक्तिनित्यस्नानमहंकनिष्ठा॥स्वास्सिय॥

१ अथ विहृति ध्यानं ॥ नासिय ॥ प्राजायामन्यास ॥ संखन साहाती
सद्रिकाधवाय ॥ विहृति तय ॥ संख तय ॥ त्रिकाधवाय ॥ नाक
पूय ॥ त्रैलोक्यं हौं सः स्वाहा १० ॥ देवसूतन ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीना
नाय नमः ॥ श्रीसदानिवाय नमः ॥ श्रीस्वष्टुदवताये नमः
॥ श्रीगुनवन नमः ॥ तियथ मन ॥ त्रैलोक्यं हौं सः स्वाहा पंचवक्त्रसदा

निवाय नमः ॥ ३ ॥ अथ सप्तपतितय ॥ त्रैलोक्यं हौं सः स्वाहा ॥ साहा
सिय ॥ देवसू संखतन ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीनानाय नमः
मः ॥ श्रीसदानिवाय नमः ॥ श्रीस्वष्टुदवताये नमः ॥ श्रीगुनव
नमः ॥ ३ ॥ अथ ॥ त्रैलोक्यं हौं सः स्वाहा १० ॥ स्तोत्र ॥ नमः निवाय भंता
यकानन प्रय हत वानि वदयानि वात्मानं स्वंगतिः पन

मन्थन॥ नासिय॥ न्यास॥ सादाय॥ त्रैलोक्यः त्रैलोक्ययदुदोक्ताटिका॥
५८३॥ संस्तुनमृदोदमयत्॥ नासिय॥ ॥
सिंभर्वन॥ नासिय॥ प्राञ्जयामन्यास॥ ऊसपात्रपूजा॥ त्रैलोक्यं
ऊसपात्रायपापूजा॥ स्वानंपूजा॥ त्रैलोक्यं ऊदयायनमः॥ त्रैलोक्यं
मिनस्स्वाहा॥ त्रैलोक्यं निखायेवषट्॥ त्रैलोक्यं कववायदू॥ त्रैलोक्यं

नववयायवोषट्॥ त्रैलोक्यः त्रैलोक्ययदुदोक्ताटिका॥ वीस्वांतय॥ वंदनाकृतपुष्पं
नमः॥ मृदा॥ धनमृदोदमयत्॥ आत्मपूजा॥ आत्मनसिंचनं नमः
मः॥ आत्मनवंदनं नमः॥ आत्मनपुष्पं नमः॥ देवपूजा॥ त्रैलोक्यं
कौसः श्रीसूर्यायनमः॥ ३॥ वसि॥ ऊप॥ त्रैलोक्यं कौसः स्वाहा॥ १०॥
त्रैलोक्यं कौसनमानानाययविष्णुनमः कौ स्वाहा॥ ३॥ वसि॥ ऊप॥

ॐ सः स्वाहा ॥ १० ॥ त्रैलोक्यं सः सदा निवाय नमः ॥ ३ ॥ वसि ॥ अथा त्रैलोक्यं सः
स्वाहा ॥ १० ॥ मंत्रस्तु ॥ अवकृत्तु मसं कार्मकाश्च ययं महा द्युतिं ॥ १
भानिं सर्वपापघ्नं प्रनेमामि दिवाकनं ॥ यस्य रुक्मगदाचक्रं गन्धाय
स्य वाहनं ॥ स भक्तानां तु कल्याणं ॥ पद्मनाभा उनादनः ॥ नमः निवा
यार्भाताय काननत्रयहृतवा ॥ निवदयानिवात्मानं त्वं गतिः प नमः

३ ॥ सिंभर्वनविधस्तु सर्वविधिपनिपूर्वमस्तु ॥ मंत्रस्तु संधानस्वा
नं कृत्य ॥ मंत्रस्तु सनकं ॥ साहासिय ॥ विधकायन्यासयाय ॥ संख
कृतुस्तु दवस्तु तय ॥ पूजायाय ॥ स्नानं कृत्य ॥ ॥

१ अथ निष्कार्जनं ॥ नासिय ॥ प्राञ्जयामन्यासः ॥ श्रीस्वांता किलंखना
सूर्यार्घ्यः ॥ त्रैलोक्यं ॐ सः श्रीसूर्याय नमः ॥ पृथ्व्यं नमः ॥ मंत्रस्तु

यक॥ अखंडमंडलाकानं व्यापं यनवनावनं॥ तस्य दंदर्भितं यन
तस्मै श्रीगुनवनमः॥ स्नानं कुर्यात्॥ मंडलसंस्तनक॥ लाहासिय॥ स्नानं
वसीस्नानतय॥ त्रैलोक्यपद्मासनाय पापपूज॥ रत्नासतय॥ त्रैलोक्यपद्मा
सनाय पापपूज॥ आसन॥ त्रैलोक्यकूर्मासनाय पापपूज॥ आकिनिखतन
॥ त्रैलोक्यः अस्त्राय रूढ॥ रत्नाससत्रिकायथाय॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं रूढवक्ष्यं

अनं स्नाहा॥ ध्यानबंधन॥ त्रैलोक्यचतुस्रकसुसमवत्॥ त्रैलोक्यकौंकौं
रूढस्नाहा॥ न्यास॥ त्रैलोक्यः अस्त्राय रूढ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं रूढाय नमः॥
त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं निष्ठायां स्नाहा॥ त्रैलोक्यं मध्यमायां वषट्॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं
कायां हूं॥ त्रैलोक्यं कनिष्ठायां वीषट्॥ त्रैलोक्यः अस्त्राय रूढ॥ त्रैलोक्यं
हृदयाय नमः॥ त्रैलोक्यं शिरोस्थे स्नाहा॥ त्रैलोक्यं शिरोस्थे वषट्॥ त्रैलोक्यं

कैकवचायहूँ॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥
पात्रपूजा॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥
यनमः॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥
कवचायहूँ॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥त्रैलोक्यै नमः॥
वीखांतय॥चंदनाक्षतपुष्पंनमः॥मृदा॥धनमृदांदर्भयत्॥

आशा सरुकाथि

2051

I

ASHA ARCHIVES

5.11.11	11.11.11
2051	I

नंखनदवपूजातलसहाय॥अर्घपात्रसंखतय॥त्रिकूतमृदाना
 किकयाअपात्रसत्रिकाजयाय॥त्रैंग्रकोईहूँरुट्स्वाहा॥त्रैंग्रसुत्रीं
 र्घपात्रायपापू॥षण्मनपूजा॥त्रैंग्रसांक्षदयायनमः॥त्रैंग्रसीं
 नसस्वाहा॥त्रैंग्रसुंमिखायेवषट्॥त्रैंग्रसेंकवचायहूँ॥त्रैंग्रसींनत्रे
 यायवोषट्॥त्रैंग्रसःत्रस्त्रायहूँ॥वीस्वांतय॥चंदनाक्षतपूष्यंनमः॥

मृदा॥यानिमृदांदर्भयत्॥रुतसुद्धि॥अर्घपात्रयासंखत्रिकाजयाय
 स्वांतय॥त्रैंग्रत्रैंग्रकोईहूँरुट्स्वाहा॥ननुनाकाय॥साहा
 सिय॥अस्मपूजा॥त्रैंग्रत्रैंग्रसिंचनंयापू॥त्रैंग्रत्रैंग्रचंदनंयापू॥त्रैंग्र
 कोईअक्षतंयापू॥त्रैंग्रप्रोसिंहनंयापू॥त्रैंग्रसुंमाहिनीयापू॥त्रैंग्र
 ॥कोईपूष्यंयापू॥त्रयांजलिसिनस॥त्रैंग्रकोईहूँरुट्स्वाहा॥आनंद

भक्तिरेव नवानंदवीनाधियतयस्य श्रीमहाविद्यानाथस्वामी स्वामिन
पापू॥ वसि॥ त्रैलोक्यवसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ विंदुदिव्य ॥ त्रैलोक्यनमः श्रीना
थाय ॥ त्रैलोक्यनमः श्रीसिद्धिनाथाय ॥ त्रैलोक्यनमः श्रीकृष्णनाथाय ॥ त्रैल
ोक्यपापू॥ पंचवसिदिव्य ॥ त्रैलोक्यवद्वक्त्रनाथाय वसिं गृह्ण २ स्वा
हा ॥ त्रैलोक्यद्वक्त्रपासाय वसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्ययागिनी स्वावसिं

गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्यचां चामं जये वसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्यगंगायतय व
सिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ विंदु ॥ आवाहन ॥ श्रीसंवर्कमंतलांतक्रमपदनिहि
तानंदभक्तिः सृष्टीमा सृष्टिं न्याययुक्तुष्यं स्वकृतकृतगतं पंचकं
वान्यषट्कं ॥ चत्वारः पंचकान्यं पुननपिचतुं तरुतामंतसदं सं
सृष्टं यततस्मिन्मततुर्वनं तेन वं श्रीकृष्णं ॥ आसनपूजा ॥ त्रैल

वसि॥

त्रैलोक्यनासनाय पापू॥ त्रैलोक्यकौंकुःकृपासाय पापू॥ त्रैलोक्यमयू
 नासनाय पापू॥ त्रैलोक्यश्रीकृत्स्नपूत्रवद्वकनाथाय पापू॥ वसि॥ त्रै
 लोकासनाय पापू॥ त्रैलोक्यगौंगःस्तौ श्रीकृत्स्नलक्ष्मणाय पापू॥
 वसि॥ मद्रा॥ दंड॥ तर्कनिगजमद्रांदर्मयत्॥ विंद॥ आसनयूगा॥
 त्रैलोक्यपासनाय पापू॥ त्रैलोक्यमवासनाय पापू॥ त्रयंकुसि॥ त्रैलोक्य

श्रीकृत्स्नो श्रीमानंदविकारेनवानंदवीनाधिपगयस्त्री श्री
 महाविद्यायुनाक्षवत्रीगुनमंडलनवात्माएहानुका
 यपापू॥ ३॥ वलि विद्य॥ वलिं गृह्णस्वाहा॥ ॥ विं
 आनिमूदांदर्मयत्॥ ॥ विन्द॥ नमस्त्रीनाथाय॥ ३॥ वलिमू
 ला॥ त्रैलोक्यकृत्स्नपासाय वलिं गृह्णस्वाहा॥ त्रैलोक्यवद्वक
 नाथाय॥ त्रैलोक्यगौंगलपतय॥ त्रैलोक्यआगिनीत्या॥ त्रैलोक्यमू

येवसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्य सर्वथा द व त्या वसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्य
सर्वथा ह न त्या वसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्य समस्त मंत्र पी ० सिंहासन
पी ० भय पी ० दृष्टा पश्य संदा हा प संदा ह दि व्य सिद्धि समय च
क्रया इकां पूजयामि वसिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रैलोक्य उक्ता नृकं यत्किंचित्
तत्सर्वं त्रैलोक्य दयाय नमः ॥ वसिं गृह्ण स्वाहा ॥ विंश ॥ साहासि य ॥ द

वस्त्रान ॥ श्रीस्वष्टुद वता ये स्त्रानं नमः ॥ चंदनादितय ॥ श्रीस्वष्टुद
वता ये चंदनं नमः ॥ श्रीस्वष्टुद वता ये सिंदूरं नमः ॥ श्रीस्वष्टुद व
ता ये त्रकृतं नमः ॥ श्रीस्वष्टुद वता ये पूष्यं नमः ॥ त्रय पात्रया सं
खनयि को जया य ॥ श्रीस्वां जा कितय ॥ उप ॥ त्रैलोक्य ॥ जा कितन ॥
त्रैलोक्य ॥ जा कितन ॥ त्रैलोक्य ॥ जा कितन ॥ त्रैलोक्य ॥ द्यौं द्यौं स्वाहा ॥

जाकिर्तन॥ उपसमर्पण॥ उपपूष्यं पापू॥ मंडलदयक जाकिछ
पुवसवाय स्वांतय॥ स्नात॥ अखंड मंडलका नंवा फं यनय नाव
नं॥ तत्पदं दर्भितं यनतस्मै श्रीगुरुव नमः॥ कृष्णं वदु कर्णं च ग
भर्णं विष्णुघातकं॥ संपूष्य विधिवत्तु क्लानमामि च त्रिदेवतां॥ ज्ञे
कानासनमा नूरां वदु पद्मापनिष्ठितां॥ षट्पकानगतां देवीं श्री

कृष्णिकां नमाम्यहं॥ श्रीसंवत्स मंडलां तद्वत्तु मयदनिहितानंदश
क्तिः सती मासृष्टिन्याययतुषं त्वत्तु सत्तु गतं पंचकं चान्यष
ट्कं॥ चत्वारः पंचकान्यं पुननपि चतुर्नं तत्तु तामंडलदं संसृ
ष्टं यनतस्मै नमतगुरुव नं हेनवं श्रीकृष्णं॥ अस्मत्निग्या च
नविधे रूत्सर्वं विधिपनिपूरुमस्तु॥ पूजायाय॥ विंदु॥ जाकिं स्व

पा स पूजा या य॥ सिन स खान खान का काय॥ व छिन गु ना व सि स त य
 ॥ संख न हा य॥ वि धं ति य॥ मं उ स स खान खान॥ दे व के खान खान॥
 थ अ क खान खान॥ ख गु सि ना प सा का कू य॥ मं उ स स न क॥ सा हा सि
 य॥ वी थ का य॥ न्या स या य॥ जा कि पा व स थू ना अ म स पि या व
 सि स त य॥ त्रें अ कः अ स्मा य रु ठ॥ ३॥ सा दा य॥ त्रें अ कः अ स्मा य रु ठ॥
 अ त्म सी न॥ त्रें अ कः अ स्मा य रु ठ॥

३॥ क्का टिका॥ त्रें अ रु ठ॥ ३॥ म् डा॥ सं हान म् डां द र्भ य त्॥ व सि स तं
 ख त य॥ ना सि य॥ अ त्म मं उ स वा य॥ वी स्वां जा कि सं ख अ ना अ
 ॥ अ स्म त् नि ग्गार्च न सं पू र्ण र्थ कृत क र्म नि सा कि ण ग्री सूर्या य
 अ र्घ न मः॥ स्वां त न॥ पू र्ण न मः॥ ॥ अं ति नि ग्गार्च न वि धिः॥ ॥
 सं व त् २४३ कार्त्तिक कृष्ण त्र का द शी साम वा न थ व कू

